Ameere Ahle Sunnat Se Jinnat Ke Baare Mein Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 278
Weekly Booklet : 278

अमीरे अहले सुन्नत से

जिन्नात

के बारे में सुवाल जवाब

सफ़हात 22

- जिन्नात का इन्कार करना कैसा ? 02
- घरों में बिल्लियां क्यूं रोती हैं ? 09
- क्या ख़ुश्बू लगाने से जिन्नात चिमटते हैं ? 11
- जिन्नात से हिफ़ाज़त का रूहानी इलाज । 14

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत से जिन्नात के बारे में सुवाल जवाब**

सिने त़बाअ़त : जुमादल ऊला **1444** हि., दिसम्बर **2022** ई.
ता'दाद : 000
नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत से जिन्नात के बारे में सुवाल जवाब**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

(येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से
किये गए सुवालात और उन के जवाबात पर मुश्तमिल है)

अमीरे अहले सुन्नत से जिन्नात के बारे में सुवाल जवाब

दुआए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 20 सफ़ह़ात का रिसाला : **"अमीरे अहले सुन्नत से जिन्नात के बारे में सुवाल जवाब"** पढ़ या सुन ले उसे हर त़रह़ की आफ़ातो बलिय्यात और शरीर जिन्नात के शर से मह़फ़ूज़ फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बेशक **अल्लाह** पाक ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की त़ाक़त अ़त़ा की है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के वालिद का नाम पेश करता है और कहता है कि फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप पर दुरूदे पाक पढ़ा है। (مسند بزار، 4/255، حدیث:1425)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सुवाल : बा'ज़ लोग दम दुरूद, जिन्नात और जादू को नहीं मानते, क्या इन चीज़ों का कोई सुबूत मिलता है ?

जवाब : जो लोग दम को नहीं मानते तो एक दिन उन का अपना ही दम निकल जाता है, वाक़ेई एक ता'दाद है जो जिन्नात वग़ैरा के असर को नहीं

मानती न किसी आ़मिल से इ़लाज करवाती है, ह़ालां कि उन पर वाक़ेई़ जिन्न का असर होता है। याद रखिये ! अह़ादीसे मुबारका से जिन्नात का असर साबित है बल्कि क़ुरआने करीम में एक पूरी सूरत का नाम ही "सूरए जिन्न" है, इस के इ़लावा भी क़ुरआने करीम में (मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर) जिन्नात के तज़्किरे मौजूद हैं। लिहाज़ा अगर कोई जिन्नात का इन्कार करेगा तो काफ़िर हो जाएगा ।(فتاویٰ حدیثیہ، ص167, बहारे शरीअ़त, 1/97, ह़िस्सा : 1) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/46)

सुवाल : जिन्न की ह़ाज़िरी वाले से लोग गुज़श्ता या आइन्दा की बातें पूछते हैं, क्या ऐसा करना दुरुस्त है ?

जवाब : लोगों को जब मा'लूम होता है कि फ़ुलां पर जिन्न आ गया है तो उस से सुवाल जवाब शुरूअ़ कर देते हैं, ह़ालां कि जिन्नात से ग़ैब की बातें पूछना ह़राम और शदीद ह़माक़त है बल्कि अगर येह अ़क़ीदा हुवा कि जिन्नात मुस्तक़्बिल की ख़बरें बता सकते हैं तो येह कुफ़्र होगा। (फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 175, 179 मुलख़्ख़सन) क्यूं कि क़ुरआने पाक में सराह़त है कि जिन्नात को ग़ैब का इ़ल्म नहीं है ।[1]

जिन्नात के लिये गुज़श्ता ख़बरें बताना मुम्किन है, क्यूं कि जब बच्चा पैदा होता है तो उस के साथ एक जिन्न और एक फ़िरिश्ता भी पैदा होता है, इस जिन्न को हमज़ाद कहते हैं। (مسلم، ص1158، حدیث:7109) चूंकि येह हमज़ाद बचपन से उस के साथ होता है तो इस को बहुत सारी बातें उस शख़्स की याद होती हैं और येही हमज़ाद ह़ाज़िरी वाले जिन्न को येह गुज़श्ता बातें

1... जैसा कि इर्शादे रब्बानी है : ﴿تَبَیَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ الْغَیْبَ مَا لَبِثُوْا فِی الْعَذَابِ الْمُهِیْنِ﴾ (پ22، السبا:14) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** जिन्नों की ह़क़ीक़त खुल गई अगर ग़ैब जानते होते इस ख़्वारी के अ़ज़ाब में न होते।

बता देता है जिस की वज्ह से येह जिन्न दुरुस्त ख़बरें दे रहा होता है। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 322, 323 माख़ूज़न) मसलन "बचपन में उस को टाईफ़ॉईड हो गया था और उस के बचने की उम्मीद नहीं रही थी या डॉक्टर ने ऑपरेशन का कहा था मगर फ़ुलां ने इ़लाज किया तो बिग़ैर ऑपरेशन के ठीक हो गया था वग़ैरा" और लोग समझ रहे होते हैं कि येह बड़ा पहुंचा हुवा है। यूं येह लोग उस जिन्न की बातों में आ जाते हैं ह़ालां कि उस ने कोई ग़ैब की बात नहीं बताई होती बल्कि माज़ी की सारी बातें उस हमज़ाद से सुन कर बताई होती हैं। मस्अला मुस्तक़्बिल की ख़बरों का होता है लिहाज़ा आइन्दा की ख़बरें न पूछी जाएं कि "फ़ुलां काम होगा या नहीं होगा, मुझे फ़ुलां जगह नोकरी मिलेगी या नहीं मिलेगी या फ़ुलां जगह शादी करना चाहता हूं तो शादी होगी या नहीं, मेरा बच्चा ठीक होगा या नहीं होगा वग़ैरा वग़ैरा" येह बातें जिन्नात से पूछने की नहीं हैं कि इस में ईमान का ख़त़रा है, क्यूं कि अगर येह अ़क़ीदा रख कर पूछा कि जिन्नात ग़ैब बता सकते हैं तो पूछने वाला काफ़िर हो जाएगा, मगर अफ़्सोस फ़ी ज़माना जगह जगह येह कारोबार चल रहे हैं। **अल्लाह** पाक मुसल्मानों को इस से नजात अ़त़ा फ़रमाए।

अगर किसी पर सुवारी आती हो और वोह किसी बुज़ुर्ग का नाम ले कि मैं फ़ुलां हूं, तब भी किसी मज़बूत़ आ़मिल से इ़लाज करवा लेना चाहिये, क्यूं कि वोह ह़क़ीक़त में जिन्न ही होता है, जब इ़लाज होगा तो वोह जिन्न भाग जाएगा। बा'ज़ अवक़ात ख़ानदान में भी इस त़रह़ के लोग होते हैं जो सुवारी आने का झूटा दा'वा करते हैं, क्यूं कि इस से उन की कमाई होती है वरना कम अज़ कम वाह वा तो होती ही है, क्यूं कि लोग उन के

गिर्द जम्अ़ हो जाते हैं और यूं उन को मज़ा आता है। अगर ऐसों को समझाया जाए तो बुरा भला कहना शुरूअ़ कर देते हैं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/473)

सुवाल : इन्सानों की मुख़्तलिफ़ ज़बानें होती हैं। येह इर्शाद फ़रमाइये कि जिन्नात की ज़बान कौन सी है ?

जवाब : जिन्नात की भी मुख़्तलिफ़ ज़बानें होती हैं, येह उर्दू, अ़रबी और दीगर ज़बानें भी बोलते हैं। जैसे मैं मेमन हूं लेकिन उर्दू बोल रहा हूं, इसी त़रह़ येह भी जिस शख़्स पर ह़ावी होते हैं उस की ज़बान बोलना शुरूअ़ कर देते हैं। मुम्किन है कि उस की मादरी ज़बान कुछ और होती हो।

एक पुराना वाक़िआ़ है कि मुझे किसी मेमन आदमी के पास येह कह कर ले गए कि उस की त़बीअ़त ख़राब है, मैं साथ चल पड़ा और जा कर अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ उसे सलाम किया और मिलाने के लिये हाथ आगे बढ़ाया, लेकिन उस ने हाथ नहीं मिलाया, येह देख कर मैं चौंका कि मस्अला कुछ और लगता है, वोह लैटा हुवा था और जो भी उस पर ह़ावी था वोह मेमनी में ही बोल रहा था, मुझे इस वक़्त सारी बातें तो याद नहीं हैं, अलबत्ता उस ने कुछ इस त़रह़ का बताया था कि मैं इस के साथ फ़ुलां मुल्क से आया हूं और ऐसा ऐसा मुआ़मला हुवा था। मैं ने कहा कि तुम मुझ से अकेले में मिलो, तुम से अकेले बात करनी है, मस्जिद में आ जाओ। वोह बोला कि नहीं ! मस्जिद में तक्लीफ़ होगी। मैं ने पूछा कि किसे तक्लीफ़ होगी ? तो बोला कि इसे तक्लीफ़ होगी। मैं ने पूछा : फिर कहां मिलोगे ? वोह बोला : मसान (शमशान, या'नी हिन्दूओं के मुर्दा जलाने की जगह) में मिलूंगा। इस बात से मुझे उस का मज़हब पता चल गया (या'नी वोह हिन्दू

जिन्न था) । फिर मेमनी में ही कहने लगा कि हाथ मिलाना है ? मैं ने कहा कि मैं तो पहले ही हाथ मिला रहा था । फिर मैं ने जैसे ही हाथ आगे किया तो उस ने अपना अंगूठा मेरी हथेली पर मारा, इस के बा'द झुरझुरी ली और फिर मरीज़ नॉर्मल हो गया । मरीज़ ने जैसे ही मुझे देखा तो कहा कि مَاشَآءَاللّٰه ! भई आओ ! बैठो, खाओ पियो । या'नी नॉर्मल होने के बा'द मरीज़ को मा'लूम ही नहीं हुवा कि मेरे साथ क्या हुवा था, उस का जिन्न भाग गया था । जिस वक़्त उस ने मेरी हथेली पर अंगूठा मारा था तो मेरे बदन में भी झुरझुरी दौड़ गई थी और जो शख़्स मुझे साथ ले कर गया था वोह भाग कर सीढ़ी के पास जा कर खड़ा हो गया था ।

बन्दे को ख़ाली होशियारी नहीं करनी चाहिये कि "अपने किसी के बाप से नहीं डरते ।" मैं तो बहुत डरता हूं, **अल्लाह** करीम अपना ऐसा डर अ़ता कर दे कि सारे डर दर बदर हो जाएं । इन्सान की नफ़्सिय्यात है कि वोह डरता है और इस में कोई ह़रज भी नहीं है । अभी तो कोरोना वायरस ने सब को डरा रखा है, जरासीम का ऐसा डर फैला हुवा है कि बड़े बड़े बहादुरों के पित्ते पानी हो गए हैं । झूट नहीं बोलना चाहिये कि मैं किसी से नहीं डरता ।

एक बार किसी मालदार आदमी ने मुझ से पूछा कि आप को तो डर नहीं लगता ना ? मैं ने कहा कि मुझे तो डर लगता है, जभी तो गार्डज़ रखे हुए हैं । अगर मैं होशियारी करूं कि नहीं, मुझे डर नहीं लगता तो येह झूट हो जाएगा । जो बोलते हैं कि हमें डर नहीं लगता, उन्हें सोचना चाहिये कि बिल्ली मियाउं करे तो भाग खड़े हों और अभी चूहा निकल आए तो सारे शेरमार ख़ान भागम भाग करते फिरें । अलबत्ता जो ख़ौफ़े ख़ुदा वाला

है वोह सब से बड़ा बहादुर है। इन्सान को मां बाप से भी डरना चाहिये, यूं ही उस्ताद और बुज़ुर्गों से भी उन के अदब की वज्ह से डरना चाहिये। बुज़ुर्गों से डरना बहुत अच्छा है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/251)

सुवाल : लोग कहते हैं कि मिठाई जिन्नात की पसन्दीदा ग़िज़ा है क्या येह सह़ीह़ है ?

जवाब : जिन्नात हड्डियां, कोयले और गोबर खाते हैं। (ابوداود، 1/48، حدیث:39) जिन्नात जब हड्डियां खाते हैं तो उन्हें उन में चरबी और बोटी का Taste (या'नी ज़ाएक़ा) मह़सूस होता है। रही बात मिठाई की तो हम बचपन से सुनते आ रहे हैं कि जिन्नात मिठाई खाते हैं, अगर मिठाई इन की पसन्दीदा ग़िज़ा होती तो मिठाई की दुकान किस त़रह़ बाक़ी रहती ? क्यूं कि सारे जिन्न इतने शरीफ़ तो होते नहीं कि वोह इन्सानी रूप में आएं और मिठाई ख़रीद कर ले जाएं। मेरा ख़याल है कि अगर जिन्नात मिठाई ख़रीदना शुरूअ़ कर दें तो मिठाई का धन्दा इतना हो कि एक एक गली में बारह बारह मिठाई की दुकानें खुल जाएं क्यूं कि एक रिवायत के मुत़ाबिक़ इन्सानों के मुक़ाबले में इन की ता'दाद नव गुना है।

(تفسیر طبری، پ17، الانبیاء، تحت الآیۃ:96، 9/85، حدیث:24803) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/63)

सुवाल : इन्सानों की मय्यित को दफ़्नाया जाता है, जिन्नात की मय्यित के साथ क्या मुआ़मला होता है ?

जवाब : एक सांप की ह़िकायत मिलती है कि क़ाफ़िले वालों ने सफ़ेद सांप को तड़पता देखा (जब वोह मर गया तो) उसे लपेट कर दफ़्ना दिया तो कुछ आवाज़ें आईं जिन में शुक्रिय्या अदा किया गया और बताया कि येह एक सह़ाबी जिन्न थे जो सांप की शक्ल में ज़ाहिर हुए। (دلائل النبوۃ للاصبہانی، ص214، حدیث:257)

बहर ह़ाल अब जिन्नात की तदफ़ीन वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ क्या अह़काम हैं इस उ़न्वान पर कोई किताब देखी नहीं जिस में जिन्नात के मसाइल लिखे हों। अगर कोई किताब हुई भी तो जिन्नों में ही होगी जिस से येह जिन्नात ही पढ़ सकते होंगे, हम को येह नज़र नहीं आएगी। हां ! ऐसे मुफ़्ती हुए हैं जो जिन्नात के मसाइल भी जानते थे जैसे ह़ज़रते इमाम (अबू ह़फ़्स उ़मर बिन मुह़म्मद) नसफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "मुफ़्तिये सक़लैन" थे या'नी जिन्नात और इन्सान दोनों ही इन से फ़तवा लेते और मसाइल दरयाफ़्त करते थे। यक़ीनन ह़ज़रते इमाम नसफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इतने बड़े आ़लिम होंगे कि उन्हें जिन्नात के मसाइल का भी इ़ल्म होगा। फ़ी ज़माना ऐसे आ़लिम साह़िब का हमें नहीं मा'लूम जो जिन्नात को भी मसाइल बता सकते हों। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/435)

सुवाल : क्या मुसल्मान जिन्नात को ईसाले सवाब कर सकते हैं ?

जवाब : जी हां ! मुसल्मान जिन्नात को ईसाले सवाब कर सकते हैं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/428)

जिन्नात क़ाबू करने के बजाए नफ़्स को क़ाबू करना कमाल है

सुवाल : क्या आप जिन्नात को क़ाबू करने का वज़ीफ़ा पढ़ने के लिये देते हैं ?

जवाब : जिन्नात को क़ाबू करने का वज़ीफ़ा अभी तक मैं ने भी नहीं किया और न ही मैं ने कभी जिन्न को क़ैद किया है। अगर मेरा नफ़्स मेरी क़ैद में आ जाए तो मुझ जैसा माहिर और बहादुर कोई नहीं होगा।

निहंगो अज़्दहा मारा अगर्चे शेरे नर मारा बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा

निहंग मा'ना मगरमच्छ, या'नी तू ने मगरमच्छ और शेर को मार दिया तो कोई कमाल नहीं किया, कमाल तो येह है कि तू अपने नफ़्स को मारने में काम्याब हो जाए।

जिन्नात क़ाबू करना हमारी लाइन नहीं है। मुअक्किल और जिन्नात को क़ाबू करने के लिये बा'ज़ लोग बाबा जी के पास जाते हैं तो येह ख़ुद ही बाबा जी के क़ब्ज़े में आ कर न इधर के रहते हैं न उधर के। आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में ह़ज़रते शैख़ मुह़्युद्दीन इब्ने अ़रबी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का क़ौल नक़्ल फ़रमाया है कि अगर किसी के क़ाबू में "जिन्न" आ जाए तो कम अज़ कम वोह मुतकब्बिर और मग़्रूर हो जाता है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/606 माख़ूज़न)

येह आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अक्सरिय्यत के ए'तिबार से फ़रमाया होगा, क्यूं कि आज कल तो अगर किसी की S.H.O या थानेदार से दोस्ती हो जाए तो उस के पाउं ज़मीन पर नहीं लगते और वोह ख़ूब अकड़ कर चलता है कि मेरी S.H.O से दोस्ती है। ग़ौर कीजिये कि जब S.H.O से दोस्ती पर येह ह़ाल है कि पाउं ज़मीन पर नहीं लग रहे होते तो जिन्नात को क़ाबू करने पर क्या ह़ाल होगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/40)

सुवाल : कुछ लोगों का नज़रिय्या है कि दिन या रात में जब 12 बजें, उस वक़्त कुछ लिखना, पढ़ना या मस्जिद में जाना नहीं चाहिये, वरना जिन्नात पटख़ देते हैं। क्या येह बात दुरुस्त है ?

जवाब : रमज़ान शरीफ़ में मो'तकिफ़ीन दिन रात मस्जिद में पड़े रहते हैं और रोज़ाना दो मरतबा 12 बजे का वक़्त आता है, अभी तक तो किसी मो'तकिफ़ को जिन्नात ने नहीं पटख़ा और न ही कोई जिन्न पटख़ सकता है। اِنْ شَآءَاللهُ। येह सब ढकोस्ले हैं और लोगों की चलाई हुई बातें हैं। जिस को जो समझ आता है बोल रहा होता है। उ़लमाए किराम से पूछ कर राहनुमाई लेनी चाहिये। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, जिल्द : 10, क़िस्त : 243)

सुवाल : अगर किसी घर में बिल्लियां रोती और चीख़ें मारती हों तो लोग कहते हैं कि इस घर में जादू या जिन्नात हैं, क्या इस की कोई ह़क़ीक़त है ?

जवाब : इन बातों की कोई ह़क़ीक़त नहीं है । चूंकि बिल्लियों में भी एह़सास होता है, इन का भी कुछ न कुछ ह़ाफ़िज़ा होता है, जभी तो येह मानूस होती हैं। किसी के घर जाती हैं तो उसी के दरवाज़े में दाख़िल होती हैं, दूसरे के दरवाज़े में दाख़िल नहीं होतीं, इस का मत़लब येह है कि इन्हें याद रहता है। बिल्ली के रोने का सबब येह हो सकता है कि किसी जानवर ने उस के सामने उस का बच्चा खा लिया हो, जिस का सदमा उस के जिगर में बैठ गया हो, जब उस की याद आती हो तो इस वज्ह से चीख़ती और रोती हो। बहर ह़ाल बिल्ली के रोने की ऐसी कोई भी वज्ह हो सकती है लिहाज़ा बिल्ली के रोने का येह मत़लब नहीं लेना चाहिये कि यहां जिन्नात हैं ।

जिन्नात उ़मूमन हर जगह होते हैं

जिन्नात तो आ़म त़ौर पर हर जगह होते हैं, क्यूं कि इन की ता'दाद इन्सानों के मुक़ाबले में नव गुना ज़ियादा है। या'नी एक इन्सान है तो नव (9) जिन्न हैं। इस को यूं समझिये कि अगर दुन्या में एक करोड़ इन्सान रहते हैं तो नव करोड़ जिन्न रहते हैं। याद रहे कि हर जिन्न सताता नहीं है जैसे हज़ारों इस्लामी भाई मुख़्तलिफ़ जगहों में जम्अ़ हो कर मदनी मुज़ाकरे में शरीक होते हैं, कोई किसी को तंग नहीं करता, सब पुर सुकून बैठे होते हैं तो इसी त़रह़ जिन्नात भी पुर सुकून होते हैं। अलबत्ता बा'ज़ जिन्नात शरीर भी होते हैं जो इन्सानों को नुक़्सान पहुंचाते हैं। (जिन्नात ही नहीं) नुक़्सान पहुंचाने वाले तो बा'ज़ इन्सान भी होते हैं जो मज्मअ़ में इस ताक में होते हैं कि किसी की जेब काट लें या किसी की चप्पल उठा लें ।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/138)

सुवाल : आज से चन्द साल पहले औ़रतों के साथ जिन्नात के मुआ़मलात इतने ज़ियादा नज़र नहीं आते थे जब कि आज कल येह मुआ़मलात ज़ियादा नज़र आते हैं, इस ह़वाले से आप हमारी राहनुमाई फ़रमा दीजिये ।

जवाब : औ़रतों के साथ जिन्नात के मुआ़मलात चन्द साल से नहीं बल्कि मैं बचपन से देखता सुनता आ रहा हूं अलबत्ता सब के साथ नहीं होते । औ़रतों को मज़ारात पर जिन्नात की ह़ाज़िरी आती है, जिस की वज्ह से येह बाल खोल कर उछल कूद कर रही होती हैं, उन में से बा'ज़ के साथ वाक़ेई जिन्न का असर होना और उस की त़रफ़ से सताया जाना हो सकता है जब कि बा'ज़ ड्रामे करती होंगी तो यूं मिक्स सूरते ह़ाल होती होगी लिहाज़ा जिन्नात के असर का बिल्कुल ही इन्कार कर देने की कोई वज्ह नहीं है । बा'ज़ लोग जिन्नात के असर का इनकार करते हैं मगर जब उन के अपने सर पर पड़ती होगी तो उन्हें समझ आ जाती होगी और अगर अब भी न आए तो फिर वोह सर पछाड़ पछाड़ कर मर जाते होंगे । याद रखिये ! हर औ़रत पर जिन्नात के असरात हों येह ज़रूरी नहीं, नफ़्सिय्याती असर भी होता है और बा'ज़ अवक़ात ऐसे अमराज़ भी लाह़िक़ हो जाते हैं जिस में आदमी येह समझता है कि जिन्न का असर हो गया है मसलन किसी के हाथ पाउं मुड़ जाऐं तो लोग येही समझेंगे कि जिन्न का असर हो गया है ह़ालां कि मरज़ की वज्ह से भी ऐसा होता है । आ़म त़ौर पर इस त़रह़ के मुआ़मलात बाबा जी लोगों के रह़मो करम पर होते हैं कि अगर येह जिन्न का असर कह दें तो लोग जिन्न का असर समझते हैं, जिन्नात के पूरे ख़ानदान का असर कह दें तो पूरे ख़ानदान का असर समझते हैं और जो भी वज्ह येह बता दें तो लोग वोही वज्ह अपने दिल पर ले लेते हैं । बाबा जी

लोगों को चाहिये कि बिला वज्ह लोगों को न डराएं अलबत्ता उन के हिसाब या इस्तिख़ारे वग़ैरा में अगर कोई ऐसी वज्ह सामने आती है तो उसे बताने में ह़रज नहीं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/111)

सुवाल : मग़रिब के बा'द इत्र लगाना कैसा ? नीज़ क्या चार से पांच साल की उ़म्र के बच्चों को इत्र लगा सकते हैं ?

जवाब : मग़रिब के बा'द इत्र लगाया जा सकता है। दिन रात में कोई ऐसा वक़्त नहीं जिस में इत्र लगाना मन्अ़ हो। चार पांच साल की उ़म्र के बच्चों, बल्कि चार पांच दिन के बच्चों, यहां तक कि एक दिन के बच्चे को भी इत्र लगा सकते हैं। येह ग़लत़, ग़लत़ और ग़लत़ अफ़्वाह है कि मग़रिब के बा'द ख़ुश्बू लगाने से या बच्चे को ख़ुश्बू लगाने से जिन्नात पकड़ लेते हैं या लिपट जाते हैं, ऐसा कुछ नहीं है। अगर ऐसा होता तो जिन्नात ख़ुश्बू की सारी दुकानें लूट लेते। मा'लूम नहीं उन को ख़ुश्बू पसन्द भी है या नहीं ? "फ़िरिश्तों को तो ख़ुश्बू पसन्द है।" (فردوس الاخبار، 2/32، حدیث:3630)

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़रीब बैठे हुए मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द (मौलाना अह़मद मुक़द्दम रज़वी नूरी साहिब) का बयान है कि हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाया करते थे : बुरी और बदबूदार चीज़ों की वज्ह से जिन्नात चिमटते हैं, ख़ुश्बू वग़ैरा की वज्ह से नहीं चिमटते। मग़रिब के बा'द कुछ देर के लिये बच्चों और औ़रतों को बाहर निकलने से रोकने[1] की एक वज्ह येह भी है

[1]... **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब रात का शुरूअ़ हिस्सा हो जाए या तुम शाम पाओ तो अपने बच्चों को रोक लो, क्यूं कि इस वक़्त शैत़ान फैलते हैं। फिर जब रात की एक घड़ी गुज़र जाए तो बच्चों को छोड़ दो और दरवाज़े बन्द कर दो और **अल्लाह** का नाम लो, क्यूं कि शैत़ान बन्द दरवाज़े को नहीं खोलता। (بخاری، 2/399، حدیث:3280) ह़कीमुल

कि उन्हें या तो वोह दुआ़एं याद नहीं होतीं जो उन्हें ऐसी मख़्लूक़ से बचाएं, दूसरा उन के अन्दर पाकी का इतना एहतिमाम नहीं होता जिस की वज्ह से जिन्नात वग़ैरा चिमट जाने का ख़त़रा होता है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/289)

सुवाल : क्या फ़्रीज या घर में लीमूं रखने का कोई फ़ाएदा है ?

जवाब : बुज़ुर्गों का क़ौल है कि घर में लीमूं हों तो शरीर जिन्नात नहीं आते।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/80) (لقط المرجان فی احکام الجانّ، ص103)

सुवाल : बा'ज़ अवक़ात नए घरों में आसेब और जिन्नात का मुआ़मला होता है, इस का क्या ह़ल है ?

जवाब : जिस घर में नमाज़ें पढ़ी जाएं, तिलावतें और ज़िक्रो अज़्कार हों तो वोह घर बहुत सारी बलाओं और आफ़तों से बचा रहता है। जब कि जिस घर में गाने, बाजे, फ़िल्में, ड्रामे, गाली गलोच और लड़ाई झगड़े नीज़ शराब पीने जैसे गुनाह हों उस में बलाओं का ज़ियादा आना जाना रहता है। इस लिये अपने घर को प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों से सजाएं, ना'त शरीफ़ और तिलावत की आवाज़ें आएं, اِنْ شَآءَاللّٰہ शैत़ान भाग जाएंगे।

(इस मौक़अ़ पर जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत ने फ़रमाया :) अगर जुमुआ़ के दिन 100 बार "दुरूदे ताज" पढ़ कर घर के कोनों पर दम कर लें तो भी आसेब वग़ैरा दूर हो जाएगा।

उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : शैत़ान से मुराद मूज़ी जिन्नात और मूज़ी इन्सान दोनों हैं। शाम के वक़्त ही बच्चों को इग़वा करने वाले ज़ियादा फिरते हैं। मज़ीद फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा जिन्नात व शयात़ीन का असर बच्चों पर ज़ियादा होता है, इस लिये बच्चों को निकलने से रोका गया है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/85)

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया :) **''अस्हाबे कहफ़''** के नाम अगर लिख कर लगा दिये जाएं तो शरीर जिन्नात घर में नहीं आते और अगर हों तो भाग जाते हैं। (شفاء العلیل مع القول الجمیل، ص162) इस के कई और भी इलाज हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/352)

सुवाल : मेरे बच्चों की अम्मी पर ''जिन्न'' के असरात हैं, काफ़ी इलाज करवाया है मगर त़बीअ़त बेहतर नहीं हो रही, कोई वज़ीफ़ा इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : जिन्नात से छुटकारा पाने के कई इलाज हैं। एक इलाज येह है कि जिस पर जिन्न चढ़ जाए उस के कान में अज़ान देने से जिन्न चला जाएगा। (مصنف ابن ابی شیبہ، 15/355، حدیث:30360) येह भी इलाज है कि अठ्ठारहवें पारे में मौजूद सूरए मुअमिनून की आख़िरी चार आयतें (مصنف ابن ابی شیبہ، 15/355، حدیث:30360) बुलन्द आवाज़ से पढ़ी जाएं तो जिन्न भाग जाएगा (फ़तावा रज़विय्या, 1/1115) اِنْ شَآءَاللّٰه। इसी त़रह़ **''आयतुल कुरसी''** भी जिन्नात का बेहतरीन इलाज है। (मदनी पन्जसूरह, स. 15) **अल्लाह** पाक आप के बच्चों की अम्मी को मूज़ी जिन्न से नजात बख़्शे।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/142)

सुवाल : क्या जिन्नात को उन की अस्ली सूरत में देखना मुम्किन है ?

जवाब : जिन्नात को उन की अस्ली सूरत में देखने या न देखने के बारे में उ़लमाए किराम के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं। एक क़ौल येह भी है कि जिन्नात को उन की अस्ली सूरत में कोई नहीं देख सकता (تفسیر قرطبی، پ8، الاعراف، تحت الآیۃ:27، 4/134) लिहाज़ा जिन्नात को देखने का शौक़ नहीं होना चाहिये। बा'ज़ लोग जिन्नात की तसावीर बना देते हैं, फिर

तसावीर के सींग और बड़े बड़े दांत भी बना देते हैं, येह सब फ़र्ज़ी तसावीर होती हैं, इन तसावीर का ह़क़ीक़त से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होता।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 7/419)

सुवाल : क्या जिन्नात **अल्लाह** पाक की इ़बादत भी करते हैं ?

जवाब : जी हां ! जिन्नात **अल्लाह** पाक की इ़बादत भी करते हैं। चुनान्चे क़ुरआने पाक में है : हम ने जिन्नों और इन्सानों को अपनी इ़बादत के लिये पैदा किया। (پ27، الذّٰریٰت:56۔ نزہۃ القاری،4/351) जिन्नात में ना सिर्फ़ मुसल्मान होते हैं बल्कि जिन्नात में सह़ाबा भी हुए हैं, मक्कए मुकर्रमा में "जन्नतुल मअ़ूला" की त़रफ़ "मस्जिदे जिन्न" के नाम से एक मस्जिद भी है जहां जिन्नात ने सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़बान से क़ुरआने करीम सुना तो वोह ईमान ले आए थे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/346)

सुवाल : जिन्नात से ह़िफ़ाज़त का रूह़ानी इ़लाज इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : सोते वक़्त पाबन्दी के साथ ह़िसार कर लिया करें कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी ह़िसार फ़रमाते थे। इस का त़रीक़ा येह है कि दुआ़ की त़रह़ हाथ फैला लें फिर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم के साथ सूरए इख़्लास, सूरए फ़लक़ और सूरए नास शरीफ़ पढ़ कर अपनी हथेलियों पर दम करें और सारे अगले ह़िस्से पर हाथ फेरें, फिर दाएं बाएं, जहां जहां हाथ पहुंचता है वहां हाथ फेरें। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 338 मुलख़्ख़सन) इस त़रह़ करेंगे तो येह ह़िसार हो जाएगा, फिर जिन्न जादू वग़ैरा कोई भी चीज़ اِنْ شَآءَاللّٰه असर अन्दाज़ नहीं होगी। मगर येह अ़मल मुस्तक़िल या'नी बिला नाग़ा रोज़ाना करें, तलफ़्फ़ुज़ की अदाएगी और मख़ारिज भी दुरुस्त होने चाहिएं। नमाज़

में भी जितना पढ़ना फ़र्ज़ है उतना सीखना फ़र्ज़, जितना पढ़ना वाजिब है उतना सीखना वाजिब, नीज़ नमाज़ में हम जो सूरत या आयतें पढ़ें उन का ज़बानी याद होना भी ज़रूरी है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/90)

(मज़ीद एक मक़ाम पर फ़रमाया :) येह हिसार सुन्नत से साबित है या'नी ख़ुद सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह अ़मल फ़रमाते थे। (بخاری، 3/407، حدیث:5017۔ معجم کبیر، 7/152، حدیث:6666) येह अ़मल सुन्नते मुबारका की निय्यत से कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه न कोई जिन्न सताएगा और न ही कोई जादू असर करेगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/80)

सुवाल : अगर कोई मकान कई महीनों तक ख़ाली पड़ा रहे तो क्या उस पर जिन्नात क़ब्ज़ा कर लेते हैं ?

जवाब : अल्लाह पाक बेहतर जाने, वैसे येह एक मुहावरा है : ''خانہ خالی را دیو می گیرد'' या'नी ''जो ख़ाली घर होता है उस में भूत बसेरा कर लेता है।'' लेकिन येह सिर्फ़ मुहावरा है, कोई शरई दलील नहीं है। जिन्नात वैसे भी घरों की छत पर होते हैं। (لقط المرجان فی احکام الجان، ص44۔ نزہۃ القاری، 4/351 ماخوذا) येह नज़र नहीं आते। नीज़ इन को ख़ाली घर पर क़ब्ज़ा करने की ज़रूरत भी नहीं होती, इन में से हर जिन्न तंग नहीं करता बल्कि कोई शरीर जिन्न हो तो वोह सताता है।

अल्लाह पाक इन शरीर जिन्नात से महफ़ूज़ फ़रमाए, येह शरीर जिन्नात किसी जगह हावी हो जाएं तो बहुत परेशान करते हैं, क्यूं कि येह नज़र ही नहीं आते, आदमी इन से किस तरह पीछा छुड़ाए, ऐसे जिन्नात भी जहन्नम के हक़दार हैं। नीज़ जो जिन्नात काफ़िर होंगे, वोह हमेशा जहन्नम

में रहेंगे और गुनाहगार मुसल्मान जिन्नात हमेशा जहन्नम में नहीं रहेंगे बल्कि अपने गुनाहों की सज़ा भुगत्ने के लिये जहन्नम में डाले जाएंगे।

(नुज़्हतुल क़ारी, 4/351 माख़ूज़न) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/333)

सुवाल : ह़दीसे पाक का ख़ुलासा है कि बिग़ैर "**बिस्मिल्लाह**" पढ़े खाना खाने से शैत़ान उस खाने में शरीक हो जाता है जब कि उ़लमाए किराम ने लिखा है कि जिन्नात की ख़ूराक हड्डी और गोबर होती है तो शैत़ान जब जिन्न है तो फिर येह हमारे खाने में किस त़रह़ शरीक हो जाता है ?

जवाब : येह कहां लिखा है कि शैत़ान हमारा खाना नहीं खा सकता ? ह़दीसे पाक में है कि शैत़ान खाने में शरीक हो जाता है, जैसा कि एक बार ऐसा हुवा भी कि कोई शख़्स खाना खा रहा था और उस ने "**बिस्मिल्लाह**" नहीं पढ़ी थी और खाने के दौरान उस को "**बिस्मिल्लाह**" याद आई तो उस ने कहा "بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ", सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह देख कर मुस्कुराए और फ़रमाया कि शैत़ान ने जो खाया था उस की उलटी कर दी। (ابوداود، 3/488، حدیث:3728 ملتقطا) इस का मत़लब येह है कि शैत़ान हमारा खाना खा सकता है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/86)

सुवाल : मदीने के पास जो वादिये जिन्न है उस की क्या ह़क़ीक़त है ?

जवाब : (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़रीब बैठे हुए मुफ़्ती साह़िब ने फ़रमाया :) वादिये जिन्न चूंकि मदीनए मुनव्वरह के क़ुर्ब में है, इस वज्ह से वोह मुक़द्दस मक़ाम है लेकिन इस वादी में ढाल के बा वुजूद चीज़ों का ख़ुद ब ख़ुद ऊपर की त़रफ़ जाना या मदीने की त़रफ़ बढ़ना किसी साइन्सी वज्ह से है। दुन्या में ऐसे और भी मक़ामात हैं जिन में कशिश की

वज्ह से ढाल के बा वुजूद चीज़ें ऊपर की त़रफ़ बढ़ती हैं। इस बस्ती के बारे में येह मश्हूर है कि यहां जिन्नात हैं जो चीज़ों को मदीने की त़रफ़ धकेलते हैं लेकिन इस की कोई ह़क़ीक़त न कहीं पढ़ी है और न ही किसी मो'तबर ज़रीए़ से सुनी है।

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया :) Magnet या'नी मिक़्नात़ीस कुत़्ब तारे की त़रफ़ जाता है, इस के बारे में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ''फ़तावा रज़विय्या शरीफ़'' में लिखा है कि आज तक साइन्स इस राज़ को दरयाफ़्त नहीं कर सकी कि इस की ह़क़ीक़त क्या है और मिक़्नात़ीस कुत़्ब तारे की त़रफ़ क्यूं जाता है ? (फ़तावा रज़विय्या, 29/296) अब क्या येह कह दिया जाए कि कुत़्ब तारे पर भी कोई बहुत बड़ा जिन्न बैठा होगा जो मिक़्नात़ीस को खींच लेता होगा ! बहर ह़ाल इस त़रह़ की चीज़ें जो समझ नहीं आतीं या अ़क़्ल से वरा होती हैं, लोग उन को जिन्नात की त़रफ़ मन्सूब कर देते हैं कि वोह ऐसा कर रहे हैं। जिन्नात के वुजूद का इन्कार नहीं है, येह वाक़ेई मौजूद हैं ह़त्ता कि मक्कए मुकर्रमा में मस्जिदे जिन्न भी है, क्यूं कि इस जगह पर सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ पर कुछ जिन्नात ईमान लाए थे, उसी की यादगार के त़ौर पर मस्जिदे जिन्न अभी तक क़ाइम है जो ''जन्नतुल मअ़ला'' के क़रीब में वाक़ेअ़ है। (اخبار مکۃ للازرقی، 2/201, आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 229) बहर ह़ाल जिन्नात का वुजूद यक़ीनी है लेकिन इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं है कि जो भी ख़िलाफ़े अ़क़्ल काम होगा वोह जिन्नात ही कर रहे होंगे बल्कि उस की और वुजूहात भी हो सकती हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/101)

सुवाल : लोग कहते हैं कि "जिन्नात से जो दुआ़ करवाई जाए क़बूल होती है" क्या येह दुरुस्त है ?

जवाब : अगर किसी नेक जिन्न से राबिता़ है तो उसे दुआ़ का कहने में ह़रज नहीं है, जिन्नात की दुआ़ भी क़बूल होती है । जिन्नात से दुआ़ करवाना तो दूर की बात है, बहुत से नेक इन्सान नज़र आते हैं, उन्ही से दुआ़ करवा लीजिये । दुआ़ तो गुनाहगार शख़्स की भी क़बूल होती है । ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने लिखा है कि "मज़्लूम काफ़िर और मज़्लूम जानवर की बद दुआ़ भी क़बूल होती है ।" (मिरआतुल मनाजीह़, 3/300) इसी त़रह़ जानवर की दुआ़ भी क़बूल होती है ।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/302)

सुवाल : बला से क्या मुराद है, क्या जिन्नात भी बला में दाख़िल हैं ?

जवाब : हर आफ़तो मुसीबत और परेशानी को बला कह सकते हैं । जो जिन्नात तंग करें, माल चुरा लें या सताएं तो उन्हें भी बला कहना दुरुस्त है अगर्चे वोह मुसल्मान हों या काफ़िर अलबत्ता जो नेक मुसल्मान जिन्नात बिल्कुल भी नहीं सताते तो उन्हें बला नहीं कह सकते । आ़मिलों की इस्ति़लाह़ में नापाक जिन्न उसे बोलते हैं जो काफ़िर हो और पाक जिन्न उसे कहते हैं जो मुसल्मान हो अगर्चे वोह सताता और लूटमार करता हो लेकिन मुसल्मान होने के सबब उसे पाक जिन्न ही बोलते हैं । इन्सानों में भी डकैती चोरी या दीगर गुनाह करने वाले मुसल्मान अ़क़ीदे के लिह़ाज़ से पाक ही कहलाएंगे अगर्चे आ'माल के ए'तिबार से पाक न हों ।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/16)

सुवाल : कहा जाता है कि सफ़ेद मुर्ग़ घर में रखना चाहिये, इस से बलाएं टलती हैं, लेकिन अगर वोह मुर्ग़ काटता हो तो क्या करें ?

जवाब : ज़रूरी नहीं कि बलाएं सिर्फ़ सफ़ेद मुर्ग़ से ही टलें, अगर वोह काटता है तो छुरी उसे काट देगी। अलबत्ता ह़दीसे पाक में सफ़ेद मुर्ग़ घर में रखने की तरग़ीब इस त़रह़ है कि जिन्न और बलाएं वग़ैरा इस से भागते हैं। (معجم اوسط، 1/201، حدیث:677) ऐसे मज़ामीन अह़ादीसे मुबारका में मौजूद हैं। फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल के बाब "आदाबे त़आ़म" में सफ़ेद मुर्ग़ के बारे में रिवायात ज़िक्र की गई हैं।[1] (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/456)

सुवाल : जब बच्चे बात नहीं मानते तो आ़म त़ौर पर उन्हें जिन्नात से डराया जाता है, मसलन किसी कमरे में कोई साइकिल या खिलोना रखा है और बच्चा बार बार वहां जाता है तो कहते हैं कि वहां नहीं जाना, जिन्न आ जाएगा। इस त़रह़ बच्चों को डराना कैसा ?

जवाब : अगर इस त़रह़ डराते हैं तो येह बहुत बुरी बात है, झूट, धोका और बहुत सारी ख़राबियों का मज्मूआ़ भी है। इस से बच्चे के दिल में जिन्नात का ख़ौफ़ बैठ जाएगा और बच्चे का Character (किरदार) तबाह होगा। बच्चों को हरगिज़ इस त़रह़ न डराएं, बल्कि उन का दिल बड़ा रखें और उन्हें बहादुर बनाएं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/417)

1... **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** (1) सफ़ेद मुर्ग़ रखा करो, इस लिये कि जिस घर में सफ़ेद मुर्ग़ होगा तो शैत़ान और जादूगर उस घर और उस के इर्द गिर्द वाले घरों के क़रीब न होंगे। (معجم اوسط، 1/201، حدیث:677) (2) सफ़ेद मुर्ग़ को बुरा भला मत कहो, इस लिये कि येह मेरा दोस्त है और मैं इस का दोस्त हूं और इस का दुश्मन मेरा दुश्मन है, जहां तक इस की आवाज़ पहुंचती है येह जिन्नात को दफ़्अ़ करता है। (لقط المرجان فی احکام الجان ص165)

सुवाल : मेरे कज़िन का मोबाइल गुम हो गया था, इस्तिख़ारा करवाया तो जवाब आया कि येह जिन्नात की शरारत है, येह इर्शाद फ़रमाइये कि क्या जिन्नात भी ऐसी शरारतें कर सकते हैं ?

जवाब : ऐसा होना मुम्किन तो है, लेकिन ज़रूरी नहीं कि हम हर बार चोरी का इल्ज़ाम जिन्नात पर लगा दें। दो टांग वाले जिन्नात (या'नी चोर, डकैत) भी तो घूम रहे होते हैं येह भी किसी से कम नहीं होते। याद रखिये ! इस्तिख़ारा 100 फ़ीसद यक़ीनी नहीं होता बल्कि ज़न्नी होता है, लिहाज़ा मोबाइल की चोरी को जिन्नात की शरारत समझ कर हाथ पर हाथ रख कर न बैठिये बल्कि मोबाइल तलाश कीजिये क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात बन्दा इधर उधर रख कर भी भूल जाता है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/274)

नोट : सफ़हा 13 का आख़िरी सुवाल, सफ़हा 14 का पहला सुवाल और सफ़हा 18 का आख़िरी सुवाल "शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत" की त़रफ़ से क़ाइम किया गया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का ही अ़त़ा फ़रमूदा है।

शैत़ान और जिन्नात से हिफ़ाज़त

घर का दरवाज़ा बन्द करते वक़्त याद कर के بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ الکریم शैत़ान और सरकश जिन्नात घर में दाख़िल न हो सकेंगे।

(بخاری، 3/591، حدیث:5623)

कमरे का दरवाज़ा, ख़िड़कियां, अल्मारी की दराज़ें जितनी बार भी खोल बन्द करें नीज़ लिबास, बरतन वग़ैरा हर चीज़ रखते उठाते हर बार بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ने की आ़दत बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰہ الکریم सरकश जिन्नात आप के घर में दाख़िले, चोरी और आप की चीज़ें इस्ति'माल करने से बाज़ रहेंगे।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, 1/137)